यूपीएससी प्रीलिम्स 2026 आंसर-की बैकडेटिंग और पेपर-लीक के दावों पर हमारा जवाब

> लोग उन चीज़ों से डरते हैं जिन्हें वे समझ नहीं पाते। उन्हें समझ नहीं आता कि उससे कैसे जुड़ें। यह उन्हें उनकी सुरक्षा, उनके अस्तित्व, उनके करियर और उनकी छवि के लिए ख़तरे जैसा लगता है।
> — बिल लासवेल (Bill Laswell)

एक दावा फैलाया जा रहा है कि अनंतम आईएएस (Anantam IAS) के पास यूपीएससी सिविल सेवा प्रीलिम्स 2026 के प्रश्न "पहले से ही थे" — या कि पेपर हमें लीक किया गया था — क्योंकि हमारे कुछ आंसर-की व्याख्या लेखों पर परीक्षा से पहले की प्रकाशन तिथि दिख रही थी। हम इस बात का सीधा जवाब देना चाहते हैं, क्योंकि यह आरोप गंभीर भी है और झूठा भी। नीचे लिखी हर बात को कोई भी व्यक्ति, अपने फ़ोन से, एक मिनट से भी कम समय में ख़ुद जाँच सकता है।

संक्षेप में बात यह है: हमने पेपर को **24 मई 2026** को परीक्षा होने के *बाद* हल किया — ठीक वैसे ही जैसे हर दूसरा संस्थान करता है। कुछ लोगों को जो पहले की "प्रकाशन" तिथियाँ दिखीं, वे व्याख्याओं की एक बड़ी श्रृंखला को व्यवस्थित ढंग से लगाने के लिए जानबूझकर लिया गया संपादकीय निर्णय थीं — किसी और बात का सबूत नहीं। हमारी अपनी वेबसाइट के भीतर का डेटा यही साबित करता है, और वही डेटा हम यहाँ सार्वजनिक कर रहे हैं।

इसे बहुत आसान भाषा में Grok AI के साथ पढ़ें

असल में हुआ क्या

यूपीएससी सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा **24 मई 2026** को आयोजित हुई थी। पेपर सार्वजनिक हो जाने के बाद, हमारी फैकल्टी ने वही किया जो हम हर साल करते हैं: सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-1 को हल किया, एक विस्तृत आंसर-की तैयार की, और हर उत्तर को समझाते हुए गहन लेखों की एक श्रृंखला लिखी — उसके पीछे की अवधारणा, विकल्पों को हटाने का तर्क (elimination logic), और स्रोत।

यह बहुत बड़ी मात्रा में सामग्री है। दर्जनों विस्तृत व्याख्याओं को एक ही साथ, सबको एक ही तारीख़ और समय पर प्रकाशित कर देने से, हमारे सब्सक्राइबर्स के पास एक ही झटके में पुश नोटिफिकेशन और न्यूज़लेटर ईमेल की बाढ़ आ जाती — और पूरी शृंखला को किसी समझदार क्रम में पढ़ पाना मुश्किल हो जाता। इसलिए हमने किसी भी बड़ी सामग्री-शृंखला के लिए एक सामान्य-सी बात की: हमने **उनमें से कुछ (सभी नहीं) लेखों की प्रकाशन तिथियाँ पीछे कर दीं (बैकडेट कीं)** ताकि व्याख्याएँ एक तार्किक क्रम में रहें और एक ही दिन में सबको स्पैम न करें।

यहाँ दो बातों को अलग-अलग समझना ज़रूरी है। **पहली**, परीक्षा के *बाद* तैयार की गई नई व्याख्याएँ ही ऐसी थीं जिनकी प्रकाशन तिथियाँ हमने पीछे कीं — और वह भी केवल शृंखला को क्रम में लगाने के लिए। **दूसरी**, हमारी साइट पर परीक्षा से *पहले* के कई लेख पहले से ही मौजूद थे — स्थायी अवधारणा और विषय-आधारित लेख — जिन्हें हमने बिलकुल भी बैकडेट **नहीं** किया; हमने बस उन्हें संबंधित हल और लिंक के साथ **अपडेट** कर दिया। तो हमारी साइट पर किसी लेख की पुरानी प्रकाशन तिथि का मतलब इन दो सामान्य बातों में से एक है: या तो एक नई व्याख्या जिसे हमने शृंखला में क्रमबद्ध किया, या एक पुराना लेख जिसे हमने ताज़ा किया। इनमें से किसी में भी पेपर की पूर्व जानकारी शामिल नहीं है।

हम एक बात पर पूरी तरह स्पष्ट भी रहेंगे: हम तेज़ी से काम कर रहे थे ताकि पेपर ताज़ा रहते-रहते अभ्यर्थियों तक हल पहुँच जाएँ, और उस जल्दबाज़ी में हम यह सोचने के लिए नहीं रुके कि एक बैकडेट की गई *प्रकाशन* तिथि — जो अपने आप में, बिना अपडेट तिथि के साथ दिखाई जाए — कैसे ग़लत समझी जा सकती है। यह एक चूक थी, गुमराह करने की कोशिश नहीं। जैसे ही हमें यह भ्रम दिखा, हमने इसे सुधार दिया।

पूरी तरह खुलकर कहें तो: हम आज भी लेखों को बैकडेट करते हैं, और इसका कारण बिलकुल सामान्य है। **हमारी कंटेंट टीम छोटी है, और हम एक बैकलॉग (पिछला बकाया काम) पूरा कर रहे हैं** — हम अब भी लगभग एक साल का करेंट अफेयर्स कवरेज भर रहे हैं, और हर लेख को उसी तारीख़ में लगाते हैं जिससे वह असल में जुड़ा है, बजाय इसके कि पूरा पुराना संग्रह आज की फ़ीड पर एक साथ डाल दें। यह व्यवस्था (housekeeping) है, छिपाव नहीं। हम चाहेंगे कि आप जान लें कि हम ऐसा करते हैं, बजाय इसके कि आप बाद में इस पर ठोकर खाएँ और सोचते रह जाएँ।

जो हिस्सा ग़लत समझा गया: "Published" बनाम "Updated"

यही पूरी बात की जड़ है, इसलिए सटीक रहते हैं। हर वर्डप्रेस (WordPress) पोस्ट पर दो अलग-अलग टाइमस्टैम्प होते हैं:

> **प्रकाशन तिथि (Published date)** — पोस्ट पर दिखाई जाने वाली तिथि, जिसे **लेखक किसी भी मान पर सेट कर सकता है**, ज़्यादातर अपनी सामग्री को अपने पसंदीदा क्रम में व्यवस्थित करने के लिए।
>
> **अपडेट / अंतिम-संशोधित तिथि (Updated / Last-modified date)** — वह तिथि जब सामग्री वास्तव में लिखी या आख़िरी बार संपादित की गई थी, जो असली गतिविधि को दर्शाती है।

जब हमने नई व्याख्याओं को क्रमबद्ध किया, तो **केवल प्रकाशन तिथि (Published date) पीछे की गई।** उन सभी पोस्ट की **अपडेट तिथि (Updated date) ठीक वहीं रही जहाँ वह असल में थी — यानी 24 मई 2026 के बाद** — क्योंकि सामग्री असल में तभी बनाई और संपादित की गई थी। दिखाई जाने वाली तिथि को बैकडेट करने से संशोधित (modified) टाइमस्टैम्प अतीत में नहीं जाता, और जा भी नहीं सकता। सिस्टम का अपना रिकॉर्ड दिखाता है कि काम परीक्षा के *बाद* हुआ था।

> पोस्ट की संशोधित (modified) और प्रकाशन तिथियाँ तो असल में पाठकों के लिए होती ही नहीं हैं। ये बस सर्च इंजनों के लिए और सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए होती हैं। कई वेबसाइटें तो इन दोनों में से कोई भी तिथि दिखाती तक नहीं।

महत्वपूर्ण: भ्रम इसलिए पैदा हुआ क्योंकि उस समय हमारी थीम हर लेख पर केवल प्रकाशन तिथि (Published date) दिखाती थी — अपडेट तिथि नहीं। इसलिए दिखाई जा रही तिथि का स्क्रीनशॉट परीक्षा से पहले का लगता था, जबकि पोस्ट वास्तव में बाद में लिखी गई थी। **हमने तब से इसे सुधार दिया है:** अब हर पोस्ट अपनी **अपडेट तिथि (Updated date)** दिखाती है, बशर्ते पोस्ट/पेज प्रकाशन की तिथि के बाद संशोधित किया गया हो — और समय-संवेदनशील सामग्री के लिए यही ईमानदार और अधिक उपयोगी संकेत है। सभी आंसर-की लेखों की मौजूदा स्थिति यही है।

सबूत, हमारे अपने डेटाबेस से

हम आपसे यह नहीं कह रहे कि बस हमारी बात मान लें। परीक्षा के बाद लिखे गए इस बैच में **66 व्याख्या लेख** थे। उनमें से हर एक पर **24–25 मई 2026 की अपडेट तिथि** है — यानी पेपर के ठीक बाद — चाहे उस पर प्रकाशन तिथि कोई भी दिख रही हो। नीचे एक प्रतिनिधि नमूना है, जो सीधे साइट से लिया गया है:

[चित्र: परीक्षा-बाद की व्याख्या लेखों का एक नमूना। प्रकाशन तिथि पीछे क्रमबद्ध की गई थी; असली तिथि अपडेट तिथि है। इसको आप अंग्रेजी वर्शन में देख सकते हैं।]

पूरी सूची — सभी 66 लेख, उनकी पोस्ट आईडी, उन पर दिखती प्रकाशन तिथियाँ, और असली अपडेट तिथियाँ — डाउनलोड करके ख़ुद जाँचने के लिए उपलब्ध है:

अगर बैकडेट की गई तिथि पूर्व जानकारी का सबूत होती, तो हमारी "भौतिकी में नोबेल पुरस्कार 2025" (Nobel Prize in Physics 2025) वाली व्याख्या का मतलब यह होता कि हमें 2026 का प्रश्नपत्र अक्टूबर 2025 में ही पता था। ज़ाहिर है, यह सब इस तरह काम नहीं करता।

निर्णायक बात: पोस्ट आईडी को बैकडेट नहीं किया जा सकता

यह सबसे मज़बूत सबूत है, और इसके लिए हम पर ज़रा भी भरोसा करने की ज़रूरत नहीं। वर्डप्रेस हर पोस्ट को, उसके पहली बार बनते ही, एक स्थायी और सख़्ती से **क्रमिक रूप से बढ़ने वाली (incremental) आईडी** देता है। आईडी नंबर 100 हमेशा 101 से पहले बनती है। आप किसी पोस्ट की *दिखाई जाने वाली* तिथि बदल सकते हैं, लेकिन एक बार जारी हो चुकी आईडी को कभी घटा नहीं सकते — यह काउंटर समय के साथ केवल आगे ही बढ़ता है।

इसलिए हम असली निर्माण-क्रम सीधे आईडी से पढ़ सकते हैं। हमारी साइट पर यह काउंटर असल में इस तरह बढ़ा:

[चित्र: पोस्ट आईडी हमेशा केवल बढ़ती हैं। ये एक छेड़छाड़-रहित (tamper-proof) घड़ी की तरह हैं। इसको आप अंग्रेजी वर्शन में देख सकते हैं।]

अब दोनों बातों को मिलाकर देखिए। हमारी "भौतिकी में नोबेल पुरस्कार 2025" वाली व्याख्या पर *दिखाई जाने वाली* प्रकाशन तिथि 9 अक्टूबर 2025 है। लेकिन हमारे असली अक्टूबर-2025 के लेखों की आईडी लगभग **3,500** के आसपास हैं। इस पोस्ट की आईडी **26,289** है — एक ऐसा नंबर जहाँ तक काउंटर **24 मई 2026** को ही पहुँचा था। कोई आईडी समय में पीछे नहीं जा सकती। यह पोस्ट 24 मई 2026 को बनाई गई थी और उसे बस एक पहले की दिखाई जाने वाली तिथि दे दी गई थी। सभी 66 व्याख्या लेख एक ही कहानी कहते हैं: एक बैकडेट की गई प्रकाशन तिथि, मई-2026 के आख़िर वाली रेंज की एक आईडी, और 24–25 मई 2026 की अपडेट तिथि। दो स्वतंत्र संकेत — आईडी और अपडेट तिथि — दोनों वही बात कहते हैं जिसके आगे लीक की थ्योरी टिक ही नहीं सकती।

आप यह सब ख़ुद कैसे जाँच सकते हैं

अपडेट तिथि (Updated date) देखें। अब हर आंसर-की लेख दिखाता है कि उसे आख़िरी बार कब संशोधित किया गया — और उन सबके लिए वह तिथि 24 मई 2026 के बाद की है।

पेज का सोर्स देखें या डेवलपर टूल्स खोलें। पेज के मेटाडेटा और स्ट्रक्चर्ड डेटा में `dateModified` मान मौजूद है। यह सीधे HTML में ही है — किसी ख़ास पहुँच की ज़रूरत नहीं।

पोस्ट आईडी की तुलना करें। कोई भी आंसर-की व्याख्या और कोई भी ऐसा लेख खोलिए जो वास्तव में परीक्षा से पहले प्रकाशित हुआ हो। व्याख्या की आईडी ज़्यादा होगी — क्योंकि वह बाद में बनी थी। बैकडेट की गई तिथि कैलेंडर को नकली बना सकती है; लेकिन परीक्षा के बाद जारी हो चुकी किसी आईडी को घटा नहीं सकती।

इनमें से किसी एक पर भी एक नज़र डाल लेने से साफ़ हो जाता कि असल में क्या हुआ था। कुछ अकाउंट्स ने तीस सेकंड की क्रॉस-चेक के बजाय वायरल रास्ता चुना — एक पुरानी "प्रकाशन"-तिथि का स्क्रीनशॉट, साथ में लीक का आरोप चिपकाकर।

हमने पेपर पर सार्वजनिक रूप से, रियल टाइम में प्रतिक्रिया दी

परीक्षा के तुरंत बाद, हमारी फैकल्टी ने पूरे सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र को — प्रश्न-दर-प्रश्न — YouTube पर एक सार्वजनिक लाइव सेशन में हल किया। यह एक बिना स्क्रिप्ट वाली पहली पढ़ाई थी: न हाथ में पहले से तैयार कोई आंसर-की, न पहले से जुटाए गए कोई स्रोत — बस हमारी टीम पेपर खोलकर कैमरे के सामने उस पर तर्क करते हुए। लोग किसी पेपर को पहली बार देखते समय ऐसे ही व्यवहार करते हैं — वैसे नहीं जैसे कोई पहले से पेपर रखने वाला कभी करेगा।

हमने दो छोटे वीडियो में इस बात पर हल्के-फुल्के अंदाज़ में भी बात की कि पेपर कितना अप्रत्याशित था — उन लोगों की प्रतिक्रिया जो प्रश्नों से सचमुच चौंक गए थे:

यह किसी ऐसे संस्थान का व्यवहार नहीं है जिसे प्रश्न पता हों। यह उन शिक्षकों का व्यवहार है जो पेपर को पहली बार, सबके सामने देख रहे हैं।

लीक के आरोप पर, साफ़ शब्दों में

बिलकुल स्पष्ट रहें: **पेपर हमें लीक नहीं हुआ था, और हमारे पास प्रश्न पहले से नहीं थे।** यह एक झूठा और गंभीर आरोप है — इसका अर्थ है एक आपराधिक कृत्य — और इसका कोई आधार नहीं है। हमने 2026 प्रीलिम्स का पेपर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध हो जाने के बाद हल किया, ठीक वैसे ही जैसे हर ईमानदार संस्थान ने किया। पहले की प्रकाशन तिथियाँ एक कंटेंट श्रृंखला को व्यवस्थित करने और अपने सब्सक्राइबर्स को नोटिफिकेशन की दीवार से बचाने के लिए थीं। इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

ख़ुद से पूछने लायक कुछ सवाल

66 प्रश्न ही क्यों, 100 प्रश्न क्यों नहीं? (या 82 प्रश्न, जैसा वे वायरल दावे में कह रहे हैं?)

सभी प्रकाशन तिथियाँ अलग-अलग और लगभग 7 महीनों में फैली हुई क्यों हैं? क्या यूपीएससी ने हमें 7 महीनों में 66 प्रश्न दिए — जैसे हर चौथे दिन एक प्रश्न? क्या यूपीएससी ने प्रश्न 7 महीने पहले तैयार कर लिए थे?

अगर हमने कभी ऐसा कुछ किया होता, तो क्या हम उसे दुनिया के सामने **दिखाते**?

क्या **अनंतम आईएएस ने कभी दावा किया** कि यूपीएससी प्रीलिम्स 2026 में हमारी सामग्री से इतने प्रश्न पूछे गए?

लीक के दावे ठीक यूपीएससी प्रीलिम्स 2026 के परिणाम की घोषणा वाले दिन ही क्यों सामने आए?

कोचिंग से ख़ुद कोई पक्ष क्यों नहीं लिया गया? क्या आरोप लगाने वाले ने कोचिंग से संपर्क किया? **(नहीं,**

उन्होंने नहीं किया।)

हमारे पास 4000+ पेज हैं, और हम हर रोज़ दर्जनों लेख प्रकाशित कर रहे हैं। क्या हम अपनी सामग्री को सही ढंग से प्रबंधित करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं, ताकि वह आसानी से खोजी जा सके?

हमारी प्रतिबद्धता

हमने अनंतम आईएएस को अभ्यर्थियों के लिए चीज़ों को सही करने के सिद्धांत पर खड़ा किया है — और इसमें यह भी शामिल है कि जब हमारा किया कोई काम ग़लत समझे जाने की गुंजाइश रखता हो, तो आपके साथ सीधे रहें। किसी शृंखला की प्रकाशन तिथियों को बैकडेट करना, और पुराने लेखों को अपडेट करना — ये दोनों सामान्य संपादकीय प्रथाएँ हैं; केवल प्रकाशन तिथि दिखाना — और बिना सोचे-समझे जल्दबाज़ी करना — ही वह चूक थी, जिसे हमने सुधार दिया है। मूल तथ्य कभी नहीं बदले।

जिस किसी ने भी इस बारे में हमसे संपर्क किया, उसे ठीक-ठीक समझाया गया कि क्या हुआ था, और मामला अधिकांशतः शांत हो चुका है। हम उन अभ्यर्थियों के आभारी हैं जिन्होंने सबसे बुरा मान लेने के बजाय हमसे सीधे पूछा।

अगर आपको अब भी संदेह है, तो हम इस जाँच का स्वागत करते हैं: अपडेट तिथियाँ देखिए, सोर्स पढ़िए, आईडी की तुलना कीजिए। और अगर आप चाहें कि इनमें से कुछ भी आपको समझाया जाए, तो हमें contact@anantamias.com पर लिखिए और हम आपको ठीक वही जगह बता देंगे जहाँ देखना है। कोई भी तकनीकी व्यक्ति इंटरनेट पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध Wayback Machine और/या सर्वर तक उस SSH एक्सेस के ज़रिए — जो हम निजी तौर पर उपलब्ध कराएँगे — वेबपेजों के इतिहास और रिवीज़न की जाँच कर सकता है।

— टीम अनंतम आईएएस